हम दो हमारे बारह फिल्म कि भ्रामकता

جَآءَ الْحَقُّ وَ زَہَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَہُوْقًا

रिसर्च एवं प्रस्तुति : अब्दुल अज़ीम

लेख एवं सम्पादन : हाफिज शानउद्दीन

قُلْ ہَاتُوْا بُرْہَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

हम दो हमारे बारह फिल्म कि भ्रामकता

वर्तमान युग में आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान से पिछड़ जाने के कारण इस्लामिक आलोचना में एक नया पहलू सामने आया है कि "विकसित गैर-मुस्लिम देश और मुस्लिम दुनिया के बीच जीवन के स्तर और जीवन जीने के तरीकों में अंतर है।" इस आलोचना में इस्लाम के कारण होने वाली सामाजिक और मानवीय घटनाओं को इस्लामिक परिप्रेक्ष्य में देखे और समझे बगैर ही जबरदस्ती शामिल किया गया। इस प्रकार दुनिया को ये बताने का प्रयास किया गया कि मुस्लिम समाज वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास में पिछड़ा और सामाजिक रूप से दयनीय समाज है। इसी भ्रम से प्रभावित हो कर **"कमल चंद्रा"** ने एक हिन्दी फीचर फिल्म **"हमारे बारह"** (इस फिल्म के टाइटल का जवाब भी हम अंत में प्रस्तुत करेंगे) को फिल्माया है जिसमें मुस्लिम समाज के वैवाहिक जीवन पर आपत्ति जनक सीन दिखाए गए तथा पति पत्नी के दाम्पत्य जीवन पर कुरआन की एक पवित्र आयत को तोड़-मरोड़ कर उस पर काफी तीखी आलोचनाएं की गई हैं। पति पत्नी के माधुर्य संबंध के जिन जिन पहलुओं को नफरती एंगल से फिल्माया गया है वास्तव में वो सीन इस्लामिक नहीं अपितु गैर इस्लामिक है। इस प्रकार "हमारे बारह" नामी सिनेमा में जो दृष्टिकोण गैरमुस्लिमों के लिए परोसा गया है वह अत्यधिक भ्रामक है।। फिल्माए गए पारिवारिक मुद्दे को गैर मुस्लिम दर्शक गैर-मुस्लिम चश्मे से ही देखता तथा निर्णय लेता है। फिल्म के किरदार के माध्यम से इस्लामिक समाज की भावना को हीन बना कर नफरती चश्मे से जो संदेश कमल चंद्रा ने आम दर्शकों तक पहुंचाने का प्रयास किया है वह बहुत दुखद है। इससे देश में तनाव, अशांति और दंगों का माहौल बनने की शंका है।

औरत और खेती

पूर्वाग्रह से ग्रसित हुए बगैर यदि किसी भी धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होगा कि लगभग सभी ग्रंथों में औरत को खेत अथवा खेती की उपमा दी गई है। विशेष कर हिन्दू धर्म ग्रंथों में तो स्पष्टतः वर्णन मिलता है। इसी सन्दर्भ में कृष्ण भगवान ने गर्भाधान की प्रक्रिया को खेती तथा माता और उसमें डाले जाने वाले बीज को पिता की संज्ञा देते हुए कहा है ;

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तय: सम्भवन्ति या:।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रद: पिता ।।

अनुवाद : हे अर्जुन ! नाना प्रकार की सब योनियों में जितनी मूर्तियाँ अर्थात् शरीर धारी प्राणी उत्पन्न होते हैं, प्रकृति तो उन सबकी गर्भ धारण करने वाली माता है और मैं बीज को स्थापन करने वाला पिता हूँ। **(गीता – १४ : ४)**

इस श्लोक में श्रीकृष्ण भगवान ने संतानोत्पत्ति का जो मार्ग बताया है उसे भी खेत और बीज ही बताया है। स्पष्ट है कि खेत का शब्द स्त्री के लिए तथा बीज का शब्द पुरुष के लिए प्रयुक्त किया गया है।

इसी तरह विशुद्ध मनुस्मृति में क्षेत्र और बीज जैसे शाब्दिक रूप में स्त्री-पुरुष को स्पष्टतः संबोधित किया गया है। अतः उल्लिखित है ;

क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीजभूतः स्मृतः पुमान्।
क्षेत्रबीजसमायोगात्सम्भवः सर्वदेहिनाम्।।

अनुवाद : स्त्री खेत के तुल्य है और पुरुष बीज के तुल्य, खेत और बीज अर्थात स्त्री और पुरुष के मिलने से सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है। **(विशुद्ध मनुस्मृति – ९ : ३३)**

इसी प्रकार विशुद्ध मनुस्मृति के **अध्याय ९ : श्लोक ५२** में पुरुष को खेत वाला और **श्लोक ५३** में स्त्री को खेत की संज्ञा दी गई है।

संतानोत्पत्ति के लिए वैवाहिक जीवन का नक्शा खींचते हुए अथर्ववेद ने भी स्त्री को खेत ही दर्शाया है। स्त्री पुरुष के वैवाहिक जीवन के बाद संतानोत्पत्ति के लिए अथर्वेद ने जिस शब्द का उपयोग किया है वह भी खेत एवं बीज ही है अतः वर्णित है :

आत्मन्वत्युर्वेरा नारीयमागन् तस्यां नरो वपत बीजमस्याम्।
सा वः प्रजां जनयद् वक्षणाभ्यो बिभ्रती दुग्धमृषभस्य रेतः॥

अनुवाद : आत्मिक शक्ति संपन्न तथा श्रेष्ठ संतति की उत्पादन शक्ति से युक्त यह स्त्री वधु के रूप में पति के घर पहुंच गई है। हे पौरूष संपन्न मनुष्य ! **आप इस स्त्री में अपने वीर्य रूप वंशानुक्रम बीज का वपन करें,** तत्पश्चात यह स्त्री वीर्यवान पुरुष के वीर्य और दूध को धारण करती हुई अपनी गर्भाशय से संतान उत्पन्न करे। **(अथर्ववेद – १४ : २ : १४)**

ये वो ग्रंथ है जिसे आदि ग्रन्थ कहा जाता है। आदि ग्रन्थ के हजारों साल बाद कुरआन मजीद में भी स्त्री पुरुष के वैवाहिक जीवन के बाद संतानोत्पत्ति हेतु सूरह बकरह में अल्लाह तआला ने स्त्री को खेती ही कहा है ;

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ

अनुवाद : तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं। तुम्हें अधिकार है, जिस तरह चाहो अपनी खेती में जाओ। **(सूरह बकरह : आयत २२३)**

इस आयत में स्त्री को **حَرْثٌ** अर्थात : खेती कहा गया है तो इसमें नया क्या है ? क्यों इसे उपहास का पात्र बनाया जाता है ? क्यों इससे हीन भावना दर्शा कर एक समुदाय को दूसरे समुदाय से श्रेष्ठ होने का झूठा दिलासा दिया जाता है ? इस फीचर फिल्म को बनाने से पहले क्या कमल चंद्रा ने अपने धार्मिक ग्रंथों और मान्यताओं का अध्ययन नहीं किया ?

हिन्दू धर्म के संतों की बात करें तो स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी संतान उत्पत्ति के संदर्भ में पुरुष के लिए किसान व माली तथा स्त्री के लिए खेत व वाटिका का उदाहरण दिया है, स्वामी जी लिखते हैं :

“क्योंकि किसान वा माली मूर्ख होकर भी, अपने खेत वा वाटिका के बिना, अन्यत्र बीज नहीं बोते। जो कि साधारण बीज का और मूर्ख का यह वर्तमान है”।

(सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थ समुल्लास, पृष्ठ : १०४)

धार्मिक ग्रंथो में औरत को खेत की संज्ञा देना यह कोई औरत का अपमान नहीं है। स्त्रियों के लिए खेती के रूपक का एक बहुत ही सरल पहलू यह है कि जैसे खेती के लिए प्रकृति का नियम है कि खाद सही मौसम में और सही समय पर दी जाए और बीज खेत में ही बोए जाएं ना की खेत के बाहर, कोई भी किसान इस नियम का उल्लंघन नहीं करता, इसी प्रकार स्त्री के लिए भी यह प्रकृति का नियम है कि उसके मासिक धर्म के समय अथवा योनि के अतिरिक्त किसी भी अन्य स्थान मलद्वार इत्यादि में उसके साथ संभोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि मासिक धर्म का समय एक महिला के लिए विषयवासना से विरक्ति का समय होता है। तथा योनि के

अतिरिक्त किसी भी अन्य स्थान में संभोग एक महिला के लिए हानी अथवा पीड़ा का स्रोत है, इस कारण किसी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए इस काम को अंजाम देना जायज़ नहीं है।

अब बात करते हैं पवित्र कुरान की उपर्युक्त आयत की जिसमें दो चीजों को संदर्भित किया गया है: "एक حَرْثٌ (खेत)" यानी प्रतिबंध, देखभाल, जिम्मेदारी और सावधानी जो एक माली या कृषक अपने बगीचे या खेती के मामले में रखता है। और "दूसरा اَنّٰى شِئْتُمْ अर्थात जहां से चाहो वहां से आओ"। यानी स्वतंत्रता, स्पष्टता, स्वायत्तता, जो बगीचे या खेत के मालिक को अपने बगीचे या खेत के मामले में प्राप्त होती है।

अत: स्वतंत्रता और प्रतिबंध दोनों चीजें मिलकर यह तय करती हैं कि एक पति को अपनी पत्नी के प्रति किस प्रकार का रवैया अपनाना चाहिए। हर कोई जानता है कि विवाहित जीवन की सारी शांति और खुशी पति –पत्नी की आपसी संतुष्टि में निहित है। कुछ मोटे प्राकृतिक व स्वाभाविक प्रतिबंधों को छोड़कर उनके मध्य काम एवं एकांत की स्वतंत्रता पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

जब मनुष्य अपने इस बाग या खेत में प्रवेश करता है तो प्रकृति चाहती है कि वह एक दूसरे से लिप्त रहें। लेकिन साथ ही प्रकृति ने पुरुष के सामने यह तथ्य भी रख दिया कि स्त्री حَرْثٌ यानि खेत है जंगल नहीं। ये उसका अपना बगीचा है कोई रेगिस्तान नहीं। सो वह इसमें आने को तो सैकड़ों बार आए और जिस शान, जिस आन, जिस दिशा और जिस ओर से चाहे प्रवेश करे परन्तु उसे याद रहे कि यह बाग व खेती है। किसी भी आगमन में इस तथ्य की उपेक्षा न करें, अर्थात् ऐसी सन्तान पैदा करो जो इस लोक और परलोक दोनों में तुम्हारे लिए पूंजी बने। यह निर्देश इसलिए आवश्यक था ताकि लोग बच्चे पैदा करने के मामले में अपने कार्यों की ज़िम्मेदारी को समझें और जो कुछ भी करें, इस ज़िम्मेदारी को पूरी तरह से समझते हुए करें। इसका मतलब है कि इस समय अल्लाह ने आपको मोहलत दी है इसलिए आप अकेले में जो चाहें कर सकते हैं, लेकिन याद रखें कि एक दिन आपको अल्लाह के सामने खड़ा होना है। इसलिए तुम्हें जो भी करना है, यह सोच कर करना कि उस दिन तुम्हें उसकी पकड़ से कोई नहीं बचा पाएगा।

संभोग और पति का दायित्व

हमारे 12 फिल्म में एक सीन इस तरह का भी शूट किया गया है कि एक मुस्लिम पति अपनी पत्नी को संभोग के लिए बुलाता है तो पत्नी कहती है कि आज मैं बीमार हूँ, और फिर यह कहा गया की औरत अगर गर्भावस्था में भी हो और पति उसको अपने पास संभोग के लिए बुलाए तो पत्नी को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने पति की बात का इनकार कर दे'। जबकि इस्लाम में ऐसी व्यवहारिक हीनता का कोई सबूत नहीं मिलता बल्कि ऐसा वाक्य मुझे बृहदारण्यकोपनिषद में मिला जहाँ वर्णित है ;

चेदस्मै नैव दद्यात् काममेनां यष्ट्या वा पाणिना वोपहत्यातिक्रामेदिन्द्रियेण।

अनुवाद : यदि स्त्री मैथुन का अवसर न दे तो वह पति इच्छानुसार दंड का भय दिखाकर उसके साथ बल पूर्वक समागम करे।

(बृहदारण्यकोपनिषद – ६ : ४ : ७ , शांकरभाष्य)

इस विषय में इस्लामिक दृष्टिकोण निम्न है ;

इमाम नव्वी फरमाते हैं : **ولو كانت مريضة ، أو كان بها قرح يضرها الوطء ،**

अनुवाद : यदि पत्नी बीमार हो या उसे कोई घाव हो, तो उसे अपने पति को उसका शारीरिक उपयोग करने से रोकने का अधिकार है।

(रवज़तुत्तालिबीन - भाग ९, पृष्ठ : ५९)

स्त्री की उत्पत्ति का कारण

हमारे बारह फिल्म में फिल्माया गया एक सीन ऐसा है जिसमें पत्नी को "शौहर की फर्माबरदारी के लिए पैदा किया गया है" ऐसा बताया गया है। जबकि इस्लामिक दृष्टिकोण और कुरआन-हदीस में स्त्री के वैवाहिक जीवन को देखें तो ऐसा कोई सबूत नहीं मिलता जिसके आधार पर कहा जा सके कि स्त्रियां पुरुषों के लिए फ़र्माबरदार अथवा दासियां हैं, जिनसे पुरुष चाहे जिस तरह का व्यवहार करे उसे छूट है। बल्कि इस्लाम ने स्त्री और पुरुष दोनों को बराबरी का दर्जा दिया है तथा कर्मों के आधार पर दोनों को एक दूसरे पर बढ़ोतरी दी है। जहाँ तक उत्पत्ति का संबंध है तो इसका उत्तर कुरान में बहुत स्पष्ट रूप से मिलता है। अतः वर्णित है ;

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

अनुवाद : जिन्न और इन्सानों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया। **(कुरान : ५१:५६)**

उपरोक्त कुरआन की आयत से ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने इंसान और जिन्नात को जिसमें मर्द और औरत दोनों शामिल हैं को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। जबकि इसकी तुलना में हिन्दू ग्रंथ में स्त्री को वीर्य रखने के एक पात्र के रूप में वर्णित किया गया है :

स ह प्रजापतिरीक्षांचक्रे हन्तास्मै प्रतिष्ठां कल्पयानीति स स्त्रियः ससृजे।

अनुवाद : प्रजापति ने विचार किया कि मैं इस वीर्य की स्थापना के लिये किसी योग्य प्रतिष्ठा (आधार भूमि) का निर्माण करूँ, अतः उन्होंने स्त्री की सृष्टि की"। **(बृहदारण्यकोपनिषद - ६:४:२ शांकरभाष्य)**

मर्द दुनिया का सबसे बड़ा तोहफा है

फिल्म के एक सीन में मुस्लिम मर्द पर कटाक्ष करते हुए कहा गया है कि "खुदा रब्बुल इज्जत कि तरफ से दुनिया का सबसे बड़ा तोहफा मर्द है"। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह ने इंसान को बेहतरीन साख्त पर पैदा किया है, इसमें स्त्री-पुरुष में कोई अंतर विशेषता या भेद नहीं रखा गया है। कुरआन में वर्णित है ;

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْۤ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۟

अनुवाद : हमने इनसान को बेहतरीन साख़्त पर पैदा किया **(कुरआन - ९५:४)**

وَ لَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْۤ اٰدَمَ

अनुवाद : और हमने बनी-आदम (आदम की औलाद) को सम्मान दीया **(कुरआन - १७:७०)**

परंतु कुरान के एक स्थान पर मर्द को फजीलत दी गई है किंतु कुरआन ने इस स्थान पर यह भी स्पष्ट कर दिया कि मर्द की फज़ीलत का कारण क्या है ;

وَّ بِمَآ اَنۡفَقُوۡا مِنۡ اَمۡوَالِهِمۡ

अनुवाद : और इस बुनियाद पर कि मर्द अपने माल ख़र्च करते हैं। **(कुरआन - ४:३४)**

पवित्र कुरान की इस आयत से ज्ञात होता है कि मर्द की उत्कृष्टता उसके मर्द होने के कारण नहीं है अपितु उसके कर्म तथा उत्तरदायित्व के कारण है,

परंतु इसके विपरीत श्रीमदभगवदगीता शांकरभाष्य हिन्दी अनुवादसहित गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित के निम्नलिखित श्लोक में स्त्री को पाप योनि में सम्मिलित किया गया है :

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्यु: पापयोनय: ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥
(गीता - ९: ३२, शांकरभाष्य)

अनुवाद : क्योंकि हे पार्थ ! जो कोई पापयोनि वाले हैं अर्थात जिनके जन्म का कारण पाप है ऐसे प्राणी हैं – वे कौन हैं ? सो कहते हैं – वे स्त्री, वैश्य और शूद्र भी मेरी शरण में आकर – मुझे ही अपना अवलंबन बनाकर परम – उत्तम गति को ही पाते हैं।

शौहर मजाज़ी खुदा है

फिल्म में दिखाए गए सीन में एक स्थान पर कहा गया है कि "शौहर मजाज़ी खुदा होता है और मजाज़ी खुदा की नाफरमानी कुफ्र है और कुफ्र की सजा मौत है"। इस्लामिक मान्यता एवं ग्रन्थों में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है परंतु हिन्दू ग्रन्थों में पति को देवता अवश्य कहा गया है ;

वेदोक्तं वचनं कार्य नारीणां देवता पति: ।
नान्यस्मिन्सर्वथा भाव: कर्तव्य: कर्हिचित्क्वचित् ॥
पतिशुश्रूषणं स्त्रीणां धर्म एव सनातन: ।
यादृशस्तादृश: सेव्य: सर्वथा शुभकाम्यया ॥

अनुवाद : स्त्रियों के लिये पति ही उनका देवता होता है- इस वेदोक्त वचन का उन्हें पालन करना चाहिये। किसी दूसरे में कभी कहीं भी भावना नहीं करनी चाहिये। पति की सेवा-शुश्रूषा ही स्त्रियों का सनातन धर्म है। पति चाहे जैसा भी हो, कल्याण की इच्छा रखनेवाली स्त्री को निरन्तर उसकी सेवा करनी चाहिये ॥ **(देवी भागवत, खण्ड, १ स्कन्ध ६ अध्याय १८ श्लोक : २२-२३)**

इसी प्रकार मनुस्मृति में वर्णित है ;

उपचार्य: स्त्रिया साध्व्या सततं देववत्पति: ॥ (मनुस्मृति,५:१५४)
अनुवाद : एक पतिव्रता स्त्री को सदैव अपने पति के साथ देवता जैसा व्यवहार करना चाहिए।

पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥ (मनुस्मृति,५:१५५)
अनुवाद : उनके लिए पति की सेवा ही स्वर्ग देनेवाली है।

नाचरेत्किं चिदप्रियम् ॥ (मनुस्मृति,५:१५६)
अनुवाद : उसके विरुद्ध कोई आचरण न करे।

यदि पत्नी अपने पति के विरुद्ध कोई आचरण करती है तो देवी भागवत में पत्नी के मरणोपरांत उसे नरक में किस प्रकार की यातना मिलेगी का वर्णन निम्न प्रकार से व्यक्त हुआ है ;

दण्डेन ताडयेन्मूर्छिन तल्लोमाब्दप्रमाणकम् ।
ततो भवेन्मानवी च विधवा सप्तजन्मसु ॥

अनुवाद : और उसके सिर पर डंडे से प्रहार करते रहते हैं। उसके पति के शरीर में जितने रोम होते हैं, उतने वर्षों तक उस स्त्रीको उस नरक- कुण्ड में रहना पड़ता है। उसके बाद मानव जन्म प्राप्त करके वह सात जन्मों तक विधवा रहती है।

(देवी भागवत, खण्ड, २ स्कन्घ ९ अध्याय ३५ श्लोक :२०)

औरत शलवार के नाड़े की तरह है

“औरत शलवार के नाड़े की तरह है जब तक अंदर रहेगी तब तक हिफाजत में रहेगी” ये डायलॉग भी इस फिल्म में मारा गया है। जबकि मुझे आश्चर्य है कि यह डायलॉग लिखने वाला कितना मूर्ख व्यक्ति है, जिसे ये भी मालूम नहीं कि शलवार के नाड़े का कितना महत्व है क्योंकि यदि शलवार से उसका नाड़ा निकाल दिया जाए तो शरीर के विशेष अंग निर्वस्त्र हो जाएंगे और मनुष्य कि गरिमा तार तार हो जाएगी। समझ नहीं आ रहा कि ये डायलॉग स्त्री के अपमान के लिए लिखा गया है या उसकी महत्ता दिखाने के लिए ! वैसे हिंदू धर्म में धोती और साड़ी का रिवाज है तो वह तो हवा के कारण भी उड़ जाती है फिर चाहे कुंवारे हो या शादीशुदा।

हम दो हमारे बारह

उपरोक्त फिल्म के टाइटल को यदि इस दृष्टिकोण से लिया जाए कि इसमें “हम दो हमारे बारह” से मुसलमानों को बारह या अधिक बच्चे पैदा करने का तात्पर्य है तो हमारा कमल चंद्रा से अनुरोध होगा कि वह निम्नलिखित मंत्रों के आधार पर ‘हम दो हमारे दस’ अथवा ‘हम दो हमारे बीस’ नाम से फिल्म अवश्य बनाएं। सनद रहे कि इस्लाम ने संतान उत्पत्ति की कोई संख्या निर्धारित नहीं की है, परंतु ऋग्वेद में संख्या के साथ पुत्र प्राप्ति की प्रार्थना हमें मिलती है :

दशास्यां पुत्राना। (ऋग्वेद ,१०, ८५, ४५)
अनुवाद : इंद्रदेव इस स्त्री को दस पुत्रवती बनाएँ।

इसके साथ ही कुछ ऐतिहासिक साक्ष्य भी मिलते हैं जिसमें हिन्दू स्त्रियों ने बीस पुत्रों को जन्म दिया है ;

साकं ससूव विंशतिम्। (ऋग्वेद, १०, ८६, २३)
अनुवाद : मनु की पुत्री पर्शु ने बीस पुंत्रों को एक साथ जन्म दिया।

तथा हिंदू धर्म में उस स्त्री को महान बताया गया है जो अधिक संतान उत्पन्न करने के पश्चात भी हृष्ट - पुष्ट रहे, गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित ‘कल्याण नारी अंक’ पत्रिका में वर्णित है :

बीस सन्तति' होने पर भी जिसके शरीर में विकृति न आवे, वह स्त्री महत्त्वगालिनी है।

(कल्याण नारी अंक, वर्ष २२ संख्या १ पृष्ठ : १०७)

यदि उपरोक्त 'कल्याण नारी अंक' पत्रिका के इस प्रमाण पर गंभीरता से विचार करें तो यह सिद्ध होता है कि हिन्दू धर्म में 'हम दो हमारे दो' यानि दो संतान उत्पन्न करने वाली स्त्री की न कोई महानता है और न ही कोई विशेषता।

उपरोक्त सभी प्रमाणों को देख कर ऐसा लगता है जैसे "हम दो हमारे बारह" के फिल्म निर्माता कमल चंद्रा ने शायद हिन्दू धर्म में उल्लिखित पति पत्नी के संबंध, मान्यता, हिन्दू धर्म में स्त्री का पापयोनि होना, हिन्दू धर्म में स्त्री कि स्थिति, गर्भावस्था में भी संभोग कि अनुमति आदि को केवल इस्लामिक वेश भूषा में फिल्माया है। इसकी पूरी कथा- पटकथा, डायलॉग आदि कमल चंद्रा ने हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रन्थों से लिया है। इसलिए कमल चंद्रा से हमारा प्रश्न है कि अब वे हिन्दू मान्यतानुसार "हम दो हमारे बीस" पर कब दूसरी फिल्म बनाएँगे?

धन्यवाद।

****

दिनांक : 3/6/2024

• नोट

• पुस्तिका से संबन्धित किसी भी बात के लिए आप हमसे संपर्क कर सकते हैं। हमारा संपर्कसूत्र है;

- **islamdharmkisattyata@yahoo.com**

SUBSCRIBE TO A CHANNEL

ISLAM DHARM KI SATTYATA

- https://www.youtube.com/channel/UCeyCLxXCrIUETXDW11J1f5Q